









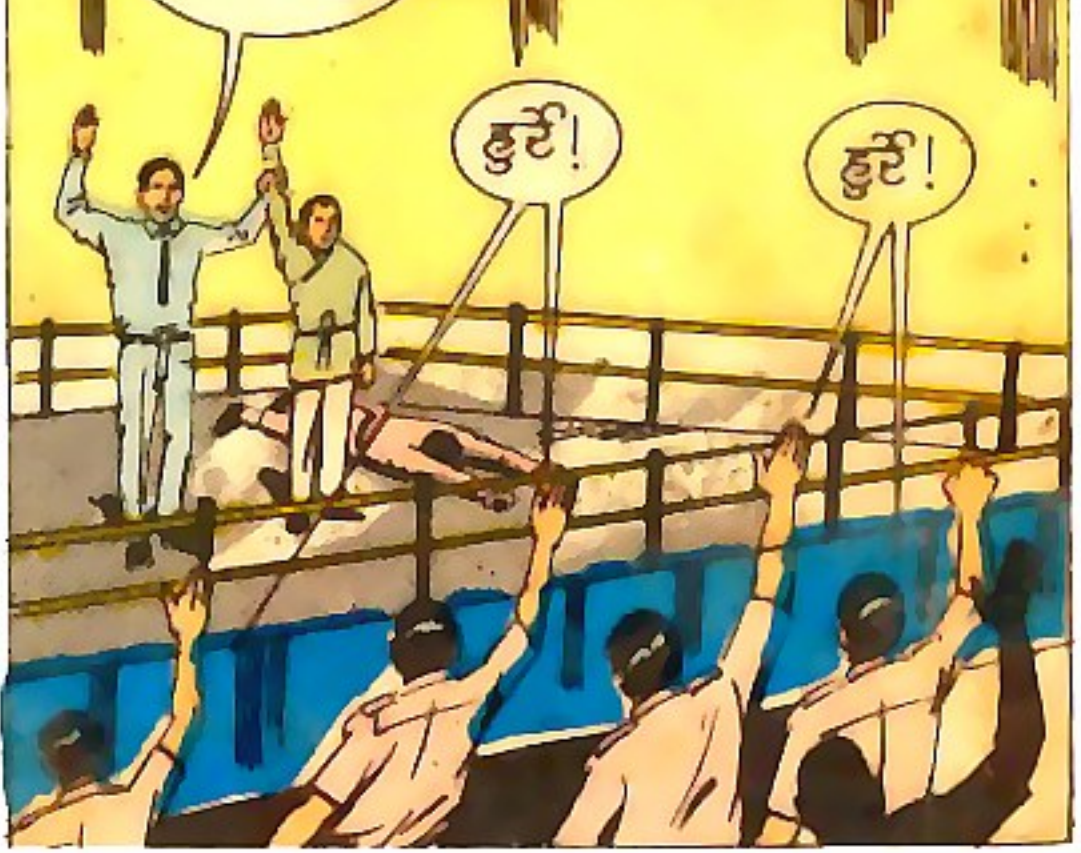




... इसी तरह देव ने अपने तीसरे विपक्षी को भी घुटकी बजाते ही मंच पर लम्बा कर दिया।



और फिर— अपने गुप में देवकुमार विजयी रहा।



उसके बाद वी गुप के छात्रों का आपस में मुकाबला आरम्भ हुआ। इस गुप में राम था। उसने भी देव की तरह अपने प्रतिद्वन्दी को एक-एक कर पलक झपकते ही बड़ी आसानी से जमीन सुंघा दी।



ही गुप में शामिल आनन्द ने भी एक से बढ़कर एक जोरदार दिखाए...



... और अपने तीनों विपक्षियों की पलक झपकते ही नाक आउट कर दिया।



रहीम की भी अपने ग्रुप के विपक्षियों की हारते ज्यादा देर नहीं लगी।

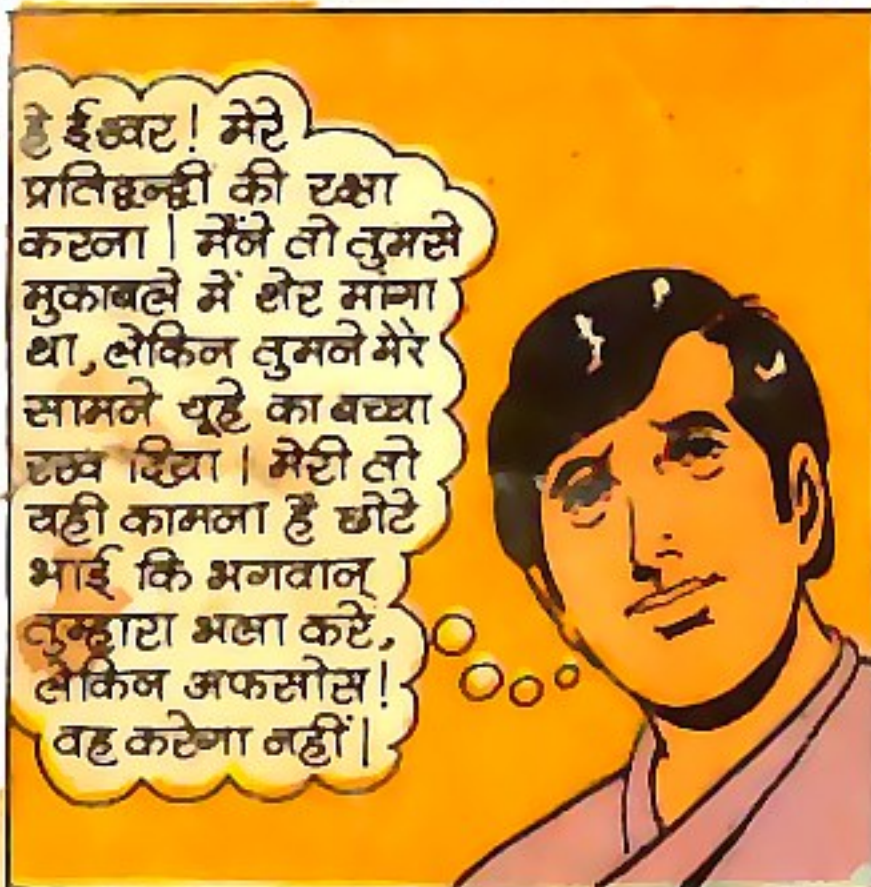




देव एक बहादुर लड़का है। निःसंदेह उससे मुकाबला करते का रहेगा और शायद काफी रोमांचक भी।



आज मैं इस जिंदादिल आनन्द की सारी जिंदादिली निकाल दूंगा। कम्बख्त, हर समय इस तरह चहकता रहता है, जैसे इसका कोई सानी नहीं। मुझे तो जैसे यह कुछ समझता ही नहीं है।



हे ईश्वर! मेरे प्रतिद्वन्दी की रक्षा करना। मैंने तो तुमसे मुकाबले में शेर माना था, लेकिन तुमने मेरे सामने यूँ का बच्चा रख दिया। मेरी तो वही कामना है छोटे भाई कि भगवान् तुम्हारा भला करे, लेकिन अफसोस! वह करेगा नहीं।



सबसे पहले मुकाबला होगा देव और राम का।

दुर्ई-दुर्ई!



क्यों सारी क्या ख्याल है तुम्हारा। इस राम और देव में कौन भारी पड़ेगा।

जम्हू भइया, हमारे विचार से तो देव पर राम ही भारी पड़ेगा।



लेकिन रमेश, देखने और ताकत में देव भी कुछ कम नहीं है। देखा नहीं, उसने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को कितनी सुगमता से पराजित किया था।

वह तो ठीक है, लेकिन राम का जूझो-कराटे में कोई जवाब नहीं है। वह तो अकेला देव जैसे दस पर भारी पड़ सकता है।

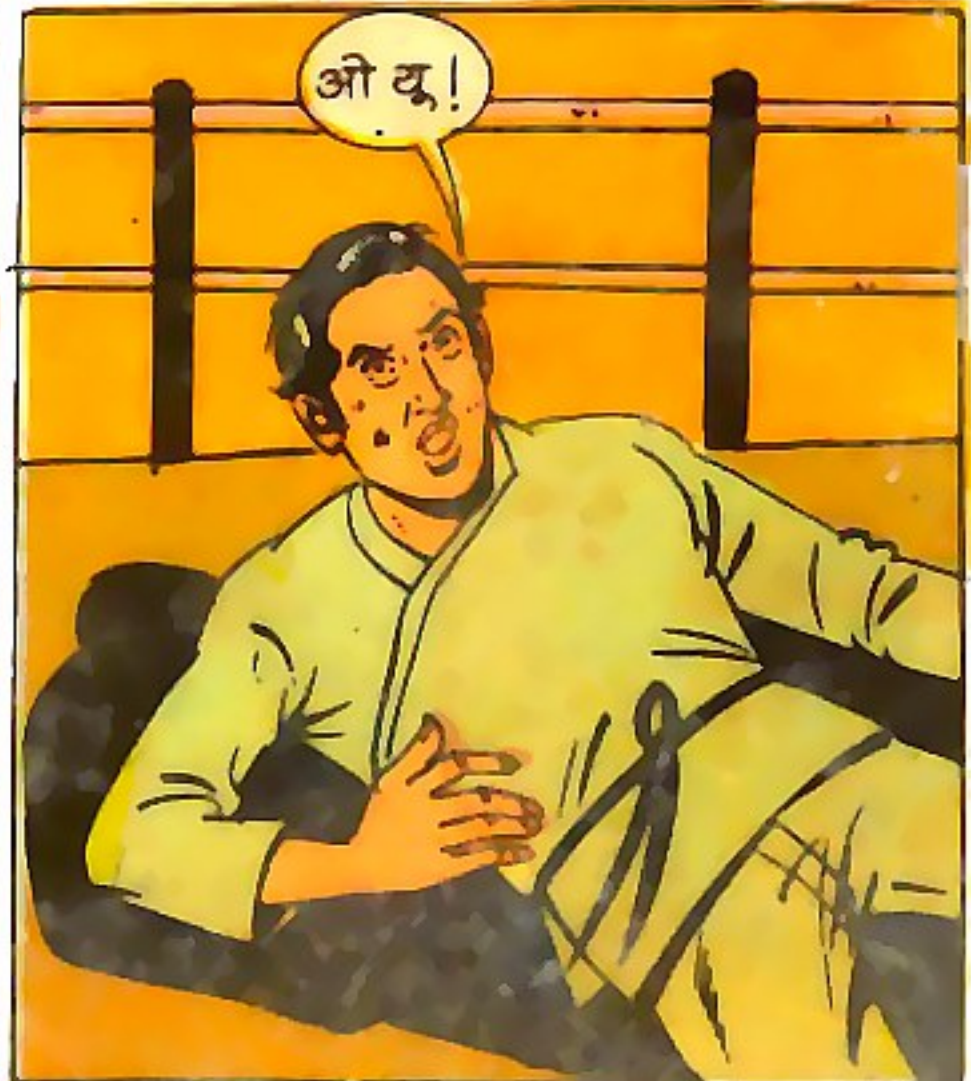
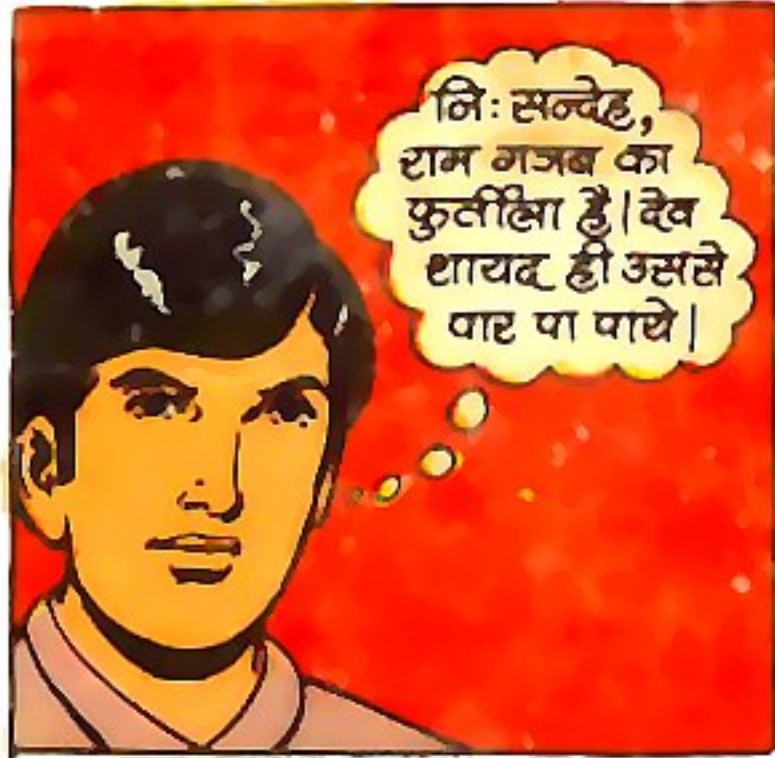






फिर राम ने देव पर एक के बाद एक ताबड़तोड़ प्रहार किये।







... अतः राम अपने आपकी देव के लगातार आक्रमण से बचा नहीं पाया।



पहला बार करने के साथ ही राम ने बिना पैर जमीन पर रखे हुवा में ही कलाबाजी छाई...



... और इस बार फिर उसके दोनों पैर पूरी शक्ति के साथ देव के सीने से टकराये।



और इस बार जो देव मंच पर गिरा वो उठ नहीं सका।



जम्बू भइया, यह बाजी तो राम जीत गया।

हां, और यदि दूसरा मुकाबला भी उसका साथी जीत गया तो तुम चारों-चार-चार जूते खाने के लिए तैयार हो जाना।



जम्बू की बात सुनकर उसके चारों साथियों का चेहरा फक्क पड़ गया।

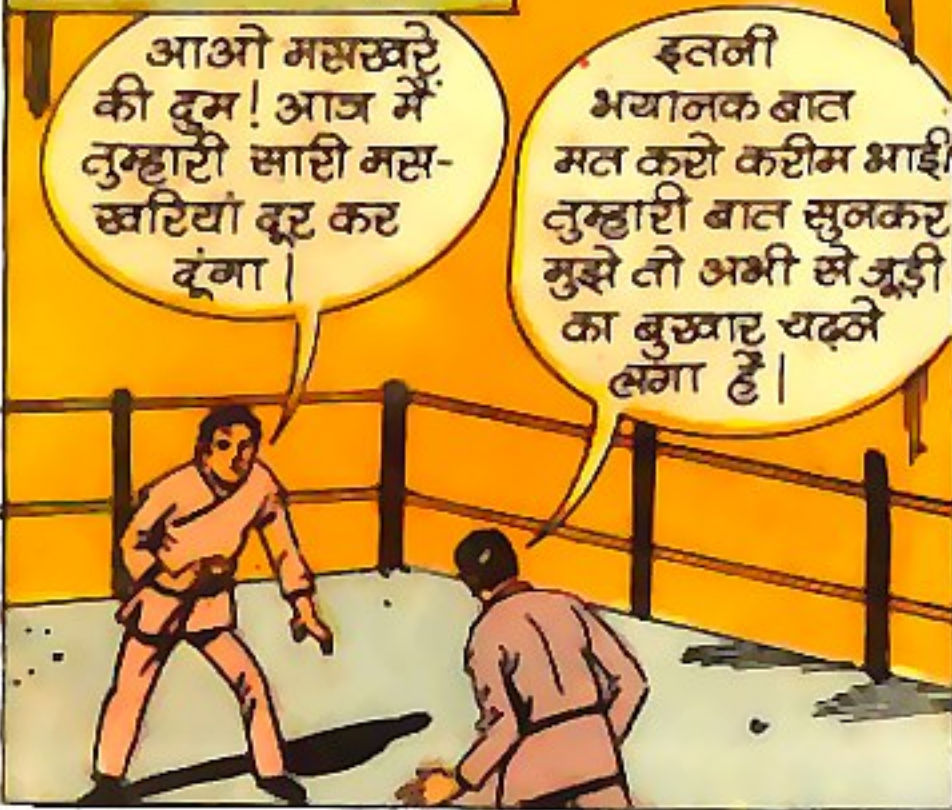
इस शैतान से दोस्ती करके तो हमने अपनी जान को मुसीबत मोल ले ली। काश! इसे रहीम की तरह कोई और भी सबक सिखा पाता।

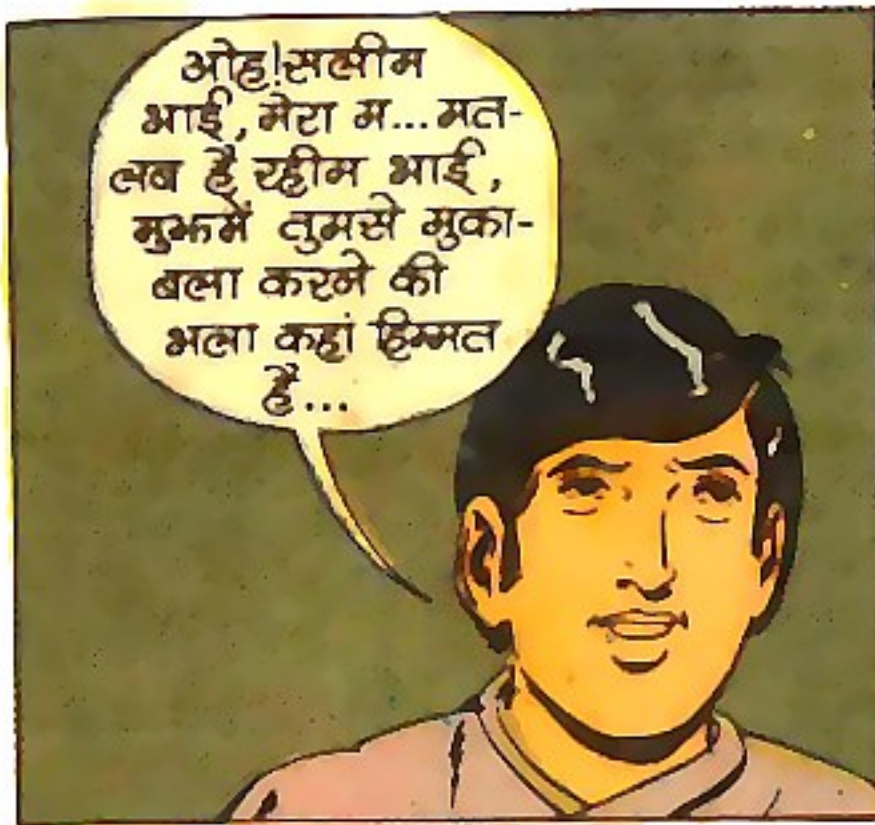


इधर -



शीघ्र ही रहीम और आनन्द के बीच दूसरा
मुकाबला आरम्भ हुआ।





ओह! सलीम भाई, मेरा मत-लब है रहीम भाई, मुझमें तुमसे मुकाबला करने की भला कहां हिम्मत है...



... क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम कुछ ले-देकर मैदान से हट जाओ और मुझे यह मुकाबला बिना लड़े ही जीतने दो।

क्या ?



न... नाराज मत हो छोटे भाई। दरअसल, मैं तुम्हारी जगह तुम्हारे बड़े भाई राम से मुकाबला करने में ज्यादा उत्सुक हूँ। अगर तुम मेरी बात मान जाओ तो कसम तुम्हारी उल्लू जैसी खोपड़ी की, मैं तुम्हारा यह एहसान कभी नहीं भूलूंगा।

अबे चूहे की औलाद, मुझसे तो मुकाबला करने की तुझमें हिम्मत नहीं और सोच रहा है राम से मुकाबला करने की। व्हर, मैं तेरी कसूर जैसी खोपड़ी को अभी सही रास्ते पर लाता हूँ।

कहने के साथ ही...

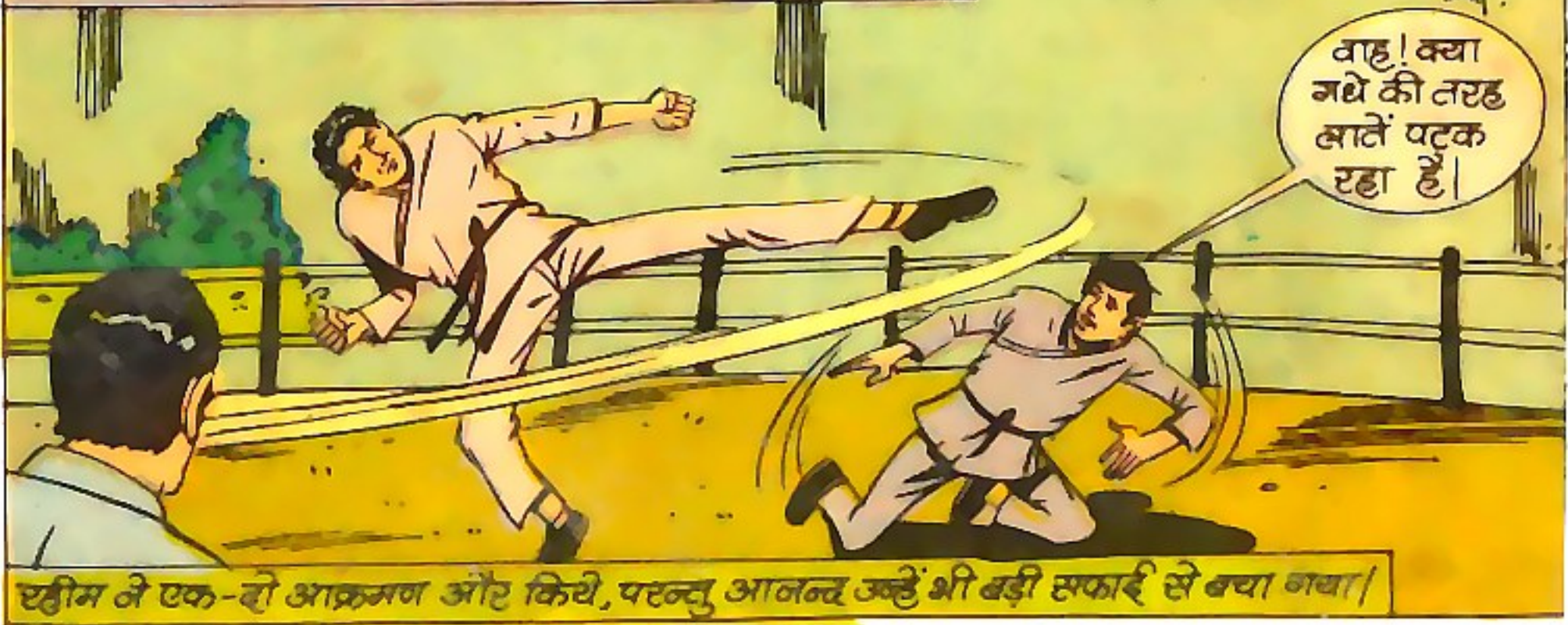


... रहीम ने अपना हाथ पूरी शक्ति से घुमाया, लेकिन आनन्द चीते के समान चौकन्ना था। वह तुरन्त नीचे बैठकर अपने आपको साफ बचा गया।

शांय!

आहा! बच गया।

रहीम ने उसे बचते देख तेजी से अपनी लात घुमाई, लेकिन आनन्द इस बार दोनों हाथों के सहारे कसाबाजी स्टाकर बच गया।



वाह! क्या गधे की तरह लातें पटक रहा है।

रहीम ने एक-दो आक्रमण और किये, परन्तु आनन्द उन्हें भी बड़ी सफाई से बचा गया।

और रहीम अपनी इस असफलता व आनन्द के कटाक्ष सुनकर धीमे ही आपे से बाहर हो गया।

अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा।

नहीं-नहीं छोटे भाई। ऐसा गजब हरमिज मत करना, वरना मेरे माता-पिता निःसंतान हो जायेंगे, क्योंकि मैं उनका इकलौता बेटा हूँ।



स्वामीदा मूर्ख!



क्रोधित हो रहीम ने भयानक ढंग से अपना हाथ घुमाया और—

अरे...रे...रे... मैं तो गिर रहा हूँ, मुझे संभालो छोटे भाई।



लेकिन वह सबकुछ आनन्द का शत-प्रतिशत अभिनय था।

लेकिन रहीम, आनन्द के अभिनय की जरा भी नहीं भांप पाया और उसे गिरता समझकर हवा में उछलकर उसे फसाईन किक मारनी चाही—

अब बच मूर्खानन्द।



अरे नहीं...!

लेकिन तभी आनन्द ने इतनी गजब की फुर्ती के साथ अपने आपकी रहीम की किक से बचाया कि रहीम को इसका आभास उस समय हुआ, जब वह मंच पर मुंह के बल गिरा।



हाय!

ज्यादा चोट तो नहीं आई गरीब भाई! माफ करना, मैंने तो पहले ही तुम्हें बंदरों की तरह उछल-कूद करने से मना किया था, लेकिन...

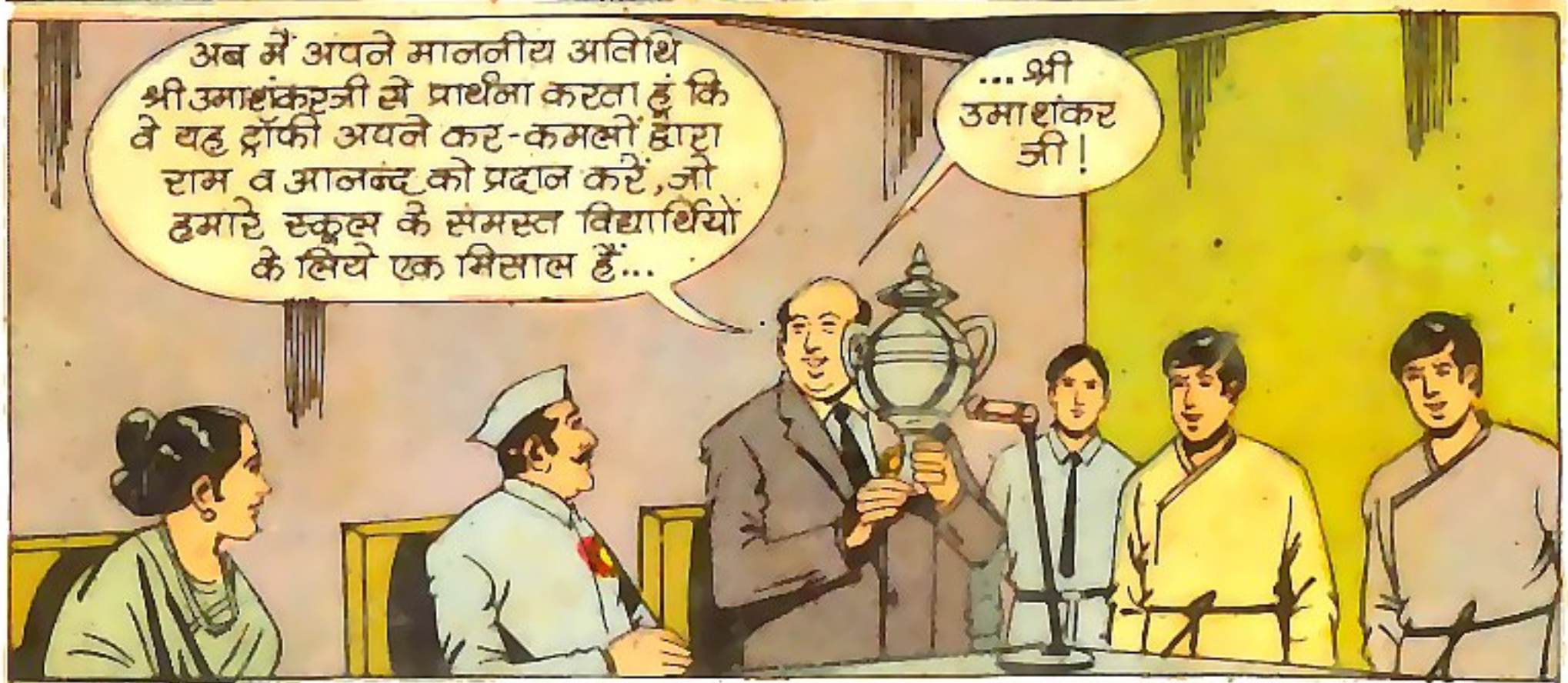
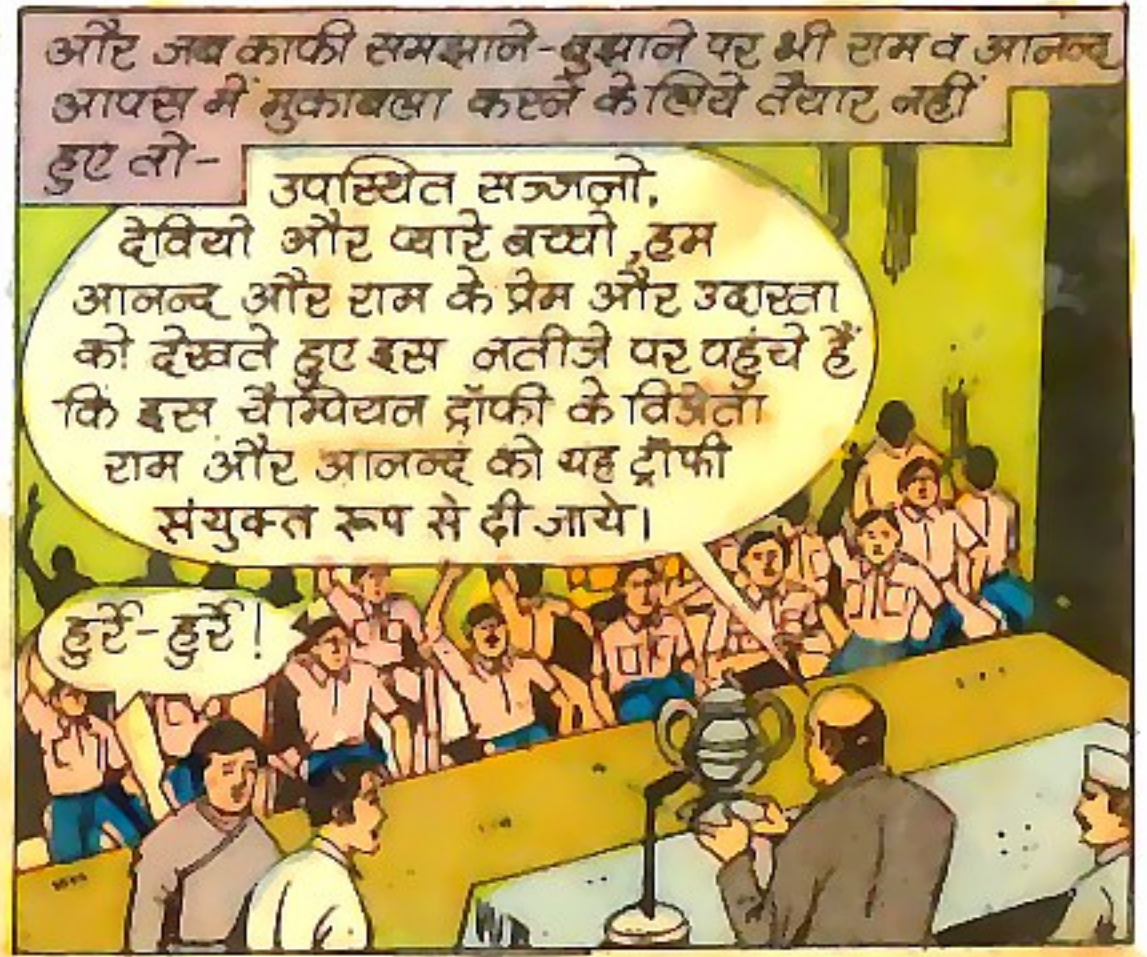
गुरि-रे-रे!

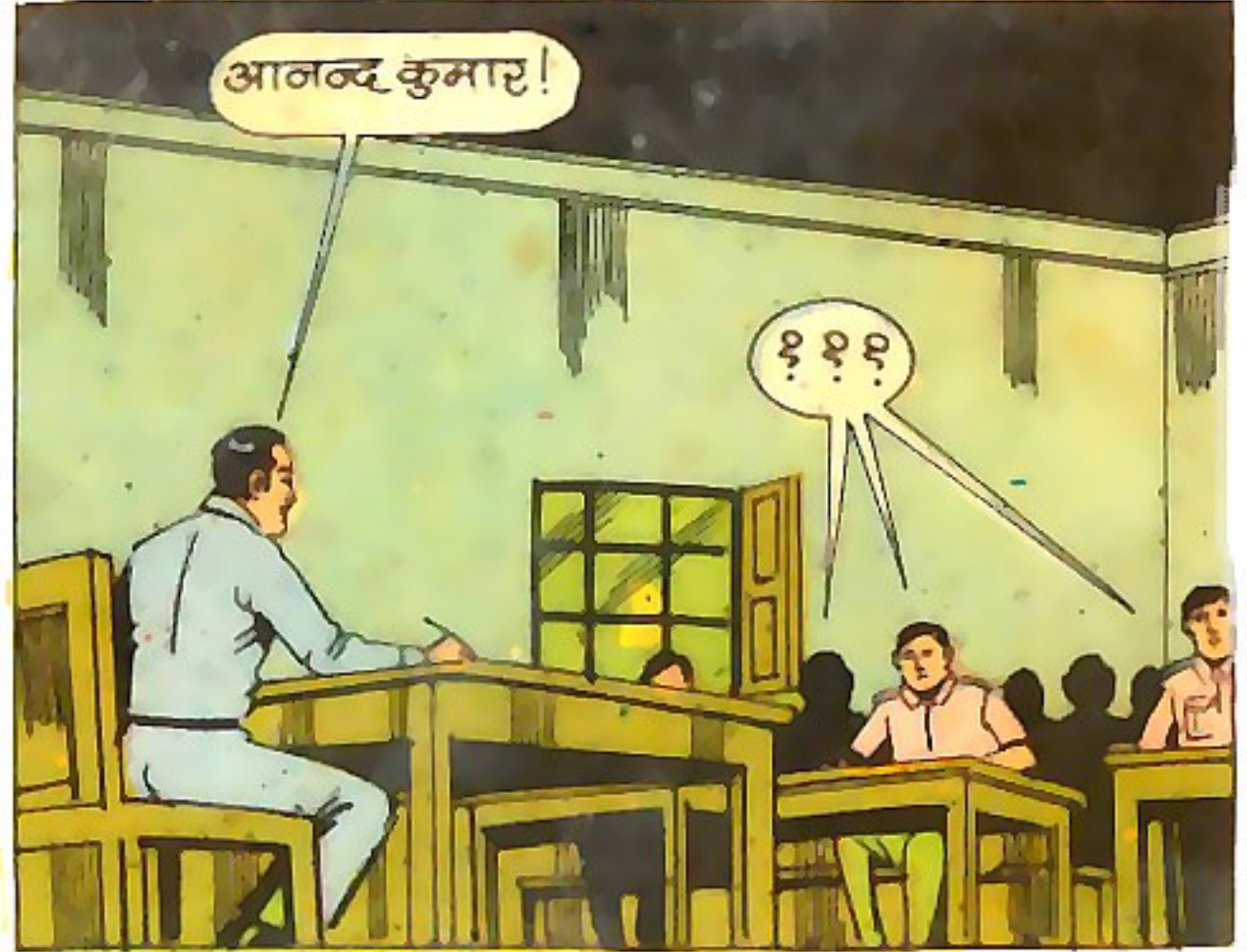














जबकि आनन्द उस समय अपने मुँह बोले शंकर काका के घर पर मौजूद था, जो उसे और देव को विभिन्न प्रकार की बुद्ध-कलाओं की शिक्षा देते थे।





डॉक्टर ने शंकर काका का निरीक्षण किया।
तत्पश्चात् दवाई आदि देने के बाद बोले—

सुनो आनन्द!
इन्हें बहुत अधिक कम-
जोरी है। अतः एक सप्ताह
तक इन्हें पूर्ण रूप से आराम
करना होगा। उचित होगा कि
ये दिमाग पर कम से कम
जोर डालें।

ओह!
यानी एक
सप्ताह
तक और
काका
अपने काम-
धंधे पर
नहीं जा
सकेगे।

फिर डॉक्टर की विदा करने के बाद—

अब क्या सोचा
तुमने भइया! बाबा तो
तुम लोगों से कैसे लेगे नहीं,
जबकि घर में खाने की
अन्न का एक दाना भी
नहीं है।

तुम चिंता मत
करों बहन! मैंने
एक उपाय सोच
लिया है। मुझे विश्वास
है, उस तरीके
पर बाबा को कोई
एतराज नहीं होगा।

आहा!
क्या उपाय
सोचा है तुमने
भइया?

अरे!
तुम दोनों वहां
खड़े होकर क्या खुसुर-
पुसुर कर रहे हो। जरा
मुझे भी तो बताओ।
खों-खों-खों!

बाबा, आपकी
जगह मैं लोगों को
तमाशा दिखाकर कैसे
कमाऊंगा और सरसा
भी मेरे साथ रहेगी।

व...
लेकिन...!

बस बाबा, अब मैं आपकी
एक नहीं सुनने वाला। जो कमाई
मैं लाऊंगा, उसमें सरसा की भी मेहनत
होगी। अतः उसे लेने में आपकी कोई
एतराज नहीं होना चाहिए।

ठीक है
बेटा! जैसा तुम
उचित समझो।





- आनन्द ने सरला के साथ मजमे में क्या-क्या तमारे दिखाए ?
- जम्बू ने राम-रहीम से किस प्रकार अपने अपमान का बदला लिया ?
- क्या चालाक, लेकिन स्वयं को मूर्ख दर्शाने वाले आनन्द से रहीम की दोस्ती हो सकी ?
- क्या राम और देव में सुलह हो सकी ?
- देव के पिता छः वर्षों से कहाँ लापता थे ? क्या वे वापस घर लौटे ?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये मनोज कॉमिक्स के

आगामी सैट में पढ़ें:-

'डबल सीक्रेट एजेंट 00½ राम-रहीम' का नवीनतम कॉमिक्स

